Dated 21|9|2020

B.A Part-3(H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज, बिरौल

महात्मा गाँधी के साध्य साधन की अवधारणा

गाँधी जी की साध्य-साधन की अवधारणा के संबंध में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे मैकियावेली तथा कौटिल्य की तरह "साध्य ही साधनों की औचित्यता सिद्ध करता है।" End Justifies the means के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते थे। इसके विपरीत "जैसे साधन होंगे वैसा ही साध्य होगा।" अर्थात गाँधी जी साध्य-साधनों के बीच नैतिक संबंध स्थापित करते हुए कहते हैं कि दूषित, बुरे तथा अनैतिक साधनों का प्रयोग करके हम अच्छे परिणामों की आशा नहीं कर सकते। गाँधीजी ने उदाहरण देते हुए कहा है कि 'यदि हम बबूल का पेड़ लगाएंगे तो हम हम आम के फल की आशा नहीं कर सकते।' इस प्रकार गाँधी जी साध्य तथा साधनों के बीच घनिष्ठ संबंध को स्वीकार करते हैं। उनकी साध्य-साधन की अवधारणा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

(i) साध्य साधनों का परिणाम है (End follows from the means) - गाँधी जी की साध्य साधनों की अवधारणा उनके नैतिक दृष्टिकोण से प्रभावित है। उनका मानना है कि हिंसा, धोखा, सत्य, असत्यवादिता आदि साधनों के द्वारा प्राप्त साध्य भी इसी प्रकार का होगा। गाँधी जी का कहना था कि "यदि आप साधनों की ओर से सतर्क रहेंगे तो साध्य स्वयं अपना ध्यान रखेगा। (ii) गाँधी जी द्वारा साधनों की पवित्रता पर बल दिया गया। गाँधी जी साध्य तथा साधनों के बीच अटूट संबंध मानते हुए पवित्र साधनों के अपनाये जाने का सुझाव देते हैं उनका कहना था कि अनैतिक साधनों से कुछ समय के लिए तो सफलता प्राप्त की जा सकती है परन्तु यह सफलता क्षणिक तथा अस्थायी होगी। हिंसा, आतंक तथा मैकियावेली की कूटनीति द्वारा सत्य, प्रेम न्याय तथा निष्कपट व्यवहार पर कुछ लाभ केवल बोझ साबित होंगे। केवल अच्छे साधनों के द्वारा ही स्थायी शान्ति तथा प्रगति के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। (iii) साध्य तथा साधन दोनों का मानदण्ड नैतिकता होना चाहिए। (The end and means, both should be measured by morality) गाँधी जी के द्वारा साधनों की पवित्रता पर बल देने का अर्थ यह नहीं है कि वे साध्य को महत्व नहीं देते थे अथवा साध्य को गौण मानते हैं। गाँधी जी के अनुसार साध्य तथा साधन दोनों एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। साधनों की पवित्रता पर बल देने का यह अभिप्राय नहीं है कि वे साध्य को महत्व नहीं देते। गाँधी जी के अनुसार साध्य भी उतना ही पवित्र होना चाहिए कि जितना कि साधन।

—X—